Fourteenth Loksabha

Session : 4
Date : 11-03-2005
Participants : Malhotra Prof. Vijay Kumar,Singh Shri Prabhunath,Geete Shri Anant Gangaram,Singh Shri Mohan,Dasgupta Shri Gurudas,Yadav Shri Devendra Prasad,Pal Shri Rupchand,Mukherjee Shri Pranab,Tripathy Shri Braja Kishore,Yerrannaidu Shri Kinjarapu,Pathak Shri Brajesh

Title: Regarding political situation in the state of Jharkhand.

The Lok Sabha re-assembled at Thirty minutes

past Twelve of the Clock.

(Mr. Speaker *in the Chair*)

12.30 hrs

RE: POLITICAL SITUATION IN THE STATE OF JHARKHAND

MR. SPEAKER: Hon. Members, please take your seats. Shri Malhotra strongly

feels about some issue. Although it relates really to an Assembly, yet in view of the feelings that have been expressed, without creating a precedent, I will allow Shri Malhotra to speak and also give opportunity to other hon. Leaders, if they wish to intervene. But, please hear. Let us listen to each other in silence, in a proper decorum and dignity.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, पिछले काफी दिनों से झारखंड के विाय में सारे देश में चर्चा हो रही है और सारा देश देख रहा है कि जनतंत्र की क्या स्थिति है? अध्यक्ष जी, झारखंड में आज वोट ऑफ कॉन्फीडेंस लेने का आदेश दिया गया और उस आदेश को मान लिया गया। प्रोटेम स्पीकर ने मीटिंग बुला ली। वहां वोट ऑफ कान्फीडेंस का मामला शुरू हो गया लेकिन पहली बार हिन्दुस्तान के इतिहास में ऐसा हुआ, वहां यूपीए का प्रोटेम स्पीकर है और वहां की सरकार के पार्लियामैंटरी अफेयर्स मिनिस्टर ने खड़े होकर यह बात कही कि इस प्रोटेम स्पीकर को वोट ऑफ कॉन्फीडैंस लेने का कोई अधिकार नहीं है। इससे ज्यादा कोई गलत बात नहीं हो सकती। गोवा में भी प्रोटेम स्पीकर था और वह भी यूपीए का था। उसने वहां वोट ऑफ कॉन्फीडेंस करवाया। उस समय सब कुछ ठीक था लेकिन वहां खड़े होकर अपने ही प्रोटेम स्पीकर को कहा जा रहा है कि वह वोट ऑफ कॉन्फीडेंस नहीं ले सकते हैं और उन्हें वोट ऑफ कॉन्फीडेंस लेने का अधिकार नहीं है इसलिए यहां पर आज बैठक न चलायी जाए। वे सीधे-सीधे माइनॉरिटी में हैं। कुल मिला कर उनके पास 34 विधायक हैं और उसके विरोध में 45 विधायक हैं। इसलिए यह कह दिया गया कि वहां यह नहीं होगा। 11 बजे बैठक शुरू हुई। 11 बजकर 40 मिनट तक सदन की बैठक पोस्टपौंड की गई। 11 बजकर 40 मिनट पर सदन की बैठक शुरू हुई, 11 बज कर 45 मिनट तक उसे पोस्टपौंड किया गया। 11 बजकर 45 मिनट पर बैठक शुरू हुई तो उसे 12 बजे तक पोस्टपौंड किया गया। फिर सवा बारह बजे तक पोस्टपौंड किया। अब दो बजे तक कर दिया। ऐसा लगता है कि वहां आज वोट ऑफ कॉन्फीडैंस नहीं किया जाएगा। अगर वोट ऑफ कॉन्फीडैंस नहीं किया जाएगा तो इसका सीधा-सीधा अर्थ यह है कि वहां माइनॉरिटी की सरकार बनाए रखने की साजिश हो रही है। यहां यूपीए के लीडर्स बैठे हैं। क्या यह प्रधान मंत्री के कहने से हो रहा है? ...(व्यवधान) हम यह जानना चाहते हैं कि क्या इसमें प्रधान मंत्री जी शामिल हैं? क्या कांग्रेस की अध्यक्षा शामिल हैं? किस के ऑर्डर से वहां ये सब किया जा रहा है? वहां जनतंत्र की हत्या न की जाए।

MR. SPEAKER: You have made your point.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : वहां वोट ऑफ कॉन्फीडेंस किया जाए। मैं यह कहना चाहता हूं कि हम दो बजे इसे देखेंगे। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदयः मैं सब को बोलने के लिए बुलाऊंगा। आप धीरज रखिए। My only request is, be brief.

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज, बिहार) : अध्यक्ष महोदय, झारखंड में जब से चुनाव हुए, सरकार बनाने से लेकर अब तक ऊहापोह की स्थिति बनी है। सभी लोग जानते हैं कि वहां भारतीय जनता पार्टी सबसे

बड़ी पार्टी के रूप में और सबसे बड़े गठबंधन के रूप में झारखंड से चुनाव जीत कर आई। उसे कुछ अन्य विधायकों का भी समर्थन प्राप्त है और वे गठबंधन के साथ हैं। *(Interruptions) ...**

MR. SPEAKER: Please do not mention 'Rajyapal'. You know that is not permissible. जिस तरीके से काम चल रहा है, आप वह बात ही कहिए।

श्री प्रभुनाथ सिंह : यह उसी से संबंधित मामला है।

MR. SPEAKER: Do not mention that. I cannot permit it. After all, I am here to see this.

श्री प्रभुनाथ सिंह : हम यह कहना चाहते हैं कि वहां जो कार्रवाई की गई, उस पर सारे दल के नेताओं ने अपनी टिप्पणी की। यहां तक कि सीपीएम, सीपीआई और कांग्रेस की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी ने भी यह कहा था कि संविधान के तहत काम होना चाहिए और अपनी नाराज़गी जाहिर की थी, उसके बाद एन.डी.ए. के लोगों को जब वहां से न्याय से संतुटि नहीं मिली तो महामहिम राट्रपति जी के पास डेलीगेशन लेकर गये। राट्रपति जी ने राज्यपाल महोदय को बुलाया। उन्होंने निर्देश जारी किया जिसके अंतर्गत विश्वास मत की तारीख 15 मार्च निश्चित की गई। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने

* Not Recorded.

सुप्रीम कोर्ट में रिट दाखिल की और सुप्रीम कोर्ट का जो निर्णय हुआ, उस निर्णय से आप भी कल दुखी थे। आपने कल एक सर्वदलीय बैठक बुलाई जिसमें मैं भी शामिल हुआ था। देश की सब से बड़ी मर्यादित पंचायत में हम लोग बैठे हुये हैं। आजकल जो घटनायें देश में घट रही हैं, उन पर विचार आवश्यक है। पहले गोवा में हुआ और आज झारखंड में हो रहा है। जब इस तरह की घटनायें घटती हैं और हम यह सवाल उठाते हैं तो हम लोग कभी-कभी असहाय हो जाते हैं और यही कहते हैं कि आखिर हम लोग यहां से क्या कर सकते हैं? सरकार यहां मौजूद है। मैं आपके माध्यम से उनसे जानना चाहता हू कि क्या हम न्याय नहीं कर सकते, कोई निर्णय नहीं कर सकते, क्या कोई राह नहीं निकाल सकते? अगर नहीं, तो ऐसी कौन सी जगह मिलेगी, कौन सा ऐसा फोरम मिलेगा जहां इस तरह के जुल्म और अत्याचार पर हम चर्चा को उठा सकते हों।

अध्यक्ष जी, आज झारखंड में जो घटना घट रही है, जहां तीन-तीन बार सदन स्थगित होता रहा हो, सदन में मारपीट तक की नौबत आ गई हो और वहां से टेलीफोन से बात हुई है कि सरकार की तरफ से संसदीय कार्य मंत्री यह सवाल उठाते हैं कि प्रोटेम स्पीकर को विश्वास मत प्राप्त करने का अधिकार नहीं है। मैं जानता हूं कि उन्हें बहुमत प्राप्त नहीं है। जहां तक हमारी ही नहीं सारे देश की शंका है कि आज कांग्रेस एक खेल खेल रही है और झारखंड में राट्रपति शासन लगाये जाने की नीयत से यह कार्यवाही की जा रही है। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हू कि ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Mr. Prabhunath Singh, you have made your point. You have made it very forcefully.

श्री प्रभुनाथ सिंह : इस तरह संविधान पर हमला हो रहा है। इस को रोकने के लिये आपको कठोर कदम उठाना चाहिये और सदन को विश्वास में लेकर कोई न कोई कार्यवाही की जानी चाहिये।

श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी (पुरी) : अध्यक्ष जी, इस देश में जो चल रहा है, पहले गोवा मे एक्सपैरिर्मेंट हुआ, आज झारखंड में हुआ है...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Let us not repeat what others have said. Mr. Braja Kishore Tripathy, you associate with what Prof. Malhotra has said.

… (*Interruptions*)

श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी : यू.पी.ए. सरकार की मंशा है कि सरकार उनकी बने। अगर नहीं बने तो राट्रपति राज लगा दिया जाये। मेरा यह ख्याल है कि जैसे 1975 में हुआ था, उसी तरह की परिस्थिति पैदा करने के लिये यू.पी.ए. सरकार अभी कोशिश कर रही है। देश की जनतंत्र व्यवस्था को तोड़ने के लिये उसे फिनिश करने के लिये ये सब हो रहा है। इससे देश में जनतंत्र नहीं रहेगा। इस तरह से पार्लियामेंटरी डैमोक्रेसी कैसे रहेगी जब हम लोग संसद में बैठे हुये हैं।…(व्यवधान)

MR. SPEKAER: Please co-opearte. We should not create a precedent like this.

… (*Interruptions*)

श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी : संविधान के मुताबिक जो उच्च स्तर की कांस्टीट्युशनल अथौरिटी होती है, अगर वह संविधान को नहीं मानेगा, सुप्रीम कोर्ट के डिसीजन को नहीं मानेगा तो देश में जनतंत्र कैसे रहेगा…(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Neither myself nor the House can do it. हम डिसीजन नहीं कर सकते।

श्री ब्रज किशोर त्रिपाठी : मैं यू.पी.ए. सरकार को बताना चाहूंगा और सदन में सरकार के नेता बैठे हुये हैं, उन से कहूंगा कि झारखंड में जो चल रहा है, देश को उससे शंका हो रही है। मैं समझता हूं कि ऐसा नहीं होना चाहिये। जनतंत्र व्यवस्था में मैजौरिटी की सरकार बननी चाहिये और जिनकी नहीं है, उसके लिये अपना विरोध प्रकट कर रहा हूं। वहां राट्रपति शासन लगाये जाने के लिये यह ड्रामा किया जा रहा है। ऐसा नहीं होना चाहिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि) : अध्यक्ष महोदय, संसदीय प्रजातंत्र में…(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please associate yourself with what Prof. Malhotra and Mr. Prabhunath Singh have submitted.

श्री अनंत गंगाराम गीते : संसदीय. प्रजातंत्र में बहुमत का अहम महत्व है और जिस प्रकार से गोवा विधानसभा में बहुमत सिद्ध होने के बाद भी…(व्यवधान)

SHRI NITISH KUMAR (NALANDA): Sir, I should also be given a chance to speak.

MR. SPEKAER: Mr. Prabhunath Singh has spoken on your behalf. You have lost your chance.

SHRI NITISH KUMAR : How can I lose my chance?… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: My weakness for you should not be taken to that length.

… (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : गीते जी, आप इस ईश्यू पर बोलिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : अध्यक्ष जी, मैं उसी पर आ रहा हूं।

उस प्रकरण की पुनरावृत्ति झारखंड में हो रही है जो गोवा में हुआ था। आज झारखंड में करने का प्रयास किया जा रहा है। इसलिये हमें शंका होती है कि ये करने वाले कौन हैं। एक तो देश की आम जनता को इस प्रकार का संदेह बना हुआ है कि जब

सरकार द्वारा कहा जाता है कि उसका इस से कोई संबंध नहीं है। जो प्रमुख राजनैतिक दल हैं, वे कह रहे हैं कि हमें संविधान का सम्मान करना चाहिये। जब राज्यपाल महोदय, जो संवैधानिक प्रमुख हैं जिनकी जिम्मेदारी संविधान का सम्मान करना है लेकिन दुर्भाग्य से जब करने का समय आता है तो ... *(Interruptions)* *

MR. SPEAKER: That will not go on record. You may speak, except that portion. आप बैठ जाइये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : इसलिए जब गोवा में बहुमत सिद्ध किया गया तो भी वहां विधान सभा को भंग किया गया, सरकार को भंग किया गया। अब झारखंड में भी वही स्थिति है। अध्यक्ष जी, आज झारखंड में ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I asked you to speak, but do not misuse it.

श्री अनंत गंगाराम गीते : जो वास्तविकता है, वही आयेगी। झारखंड में आज जो स्थिति है, वहां जिनकी सरकार है, वह अल्पमत में है और अल्पमत में होते हुए भी उन्हें सरकार बनाने की इजाजत दी गई और वहां सरकार बन गई।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Now, Shri Mohan Singh. Please cooperate with the Chair.

श्री अनंत गंगाराम गीते : उसके बाद महामहिम राट्रपति जी के सामने एन.डी.ए. ने अपना बहुमत भी सिद्ध कर दिया। आज वहां सदन के अंदर एन.डी.ए. के पास पूरा बहुमत है। प्रो टैम स्पीकर को वहां पर नियुक्त किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब खत्म कीजिए, यह सब जानते हैं।

श्री अनंत गंगाराम गीते : लेकिन वहां सुप्रीम कोर्ट के फैसले को भी नहीं माना जा रहा है। अब सरकार की ओर से यह स्टैप लिया जा रहा है कि प्रो टैम स्पीकर को सरकार बनाने के लिए बहुमत सिद्ध करने के लिए सदन चलाने का कोई अधिकार नहीं है।...(व्यवधान) इस प्रकार से आज जो स्थिति गोवा की है, धीरे-धीरे वही स्थिति झारखंड में भी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। वहां पर राट्रपति शासन लगाने का ाड्यंत्र किया जा रहा है...(व्यवधान)

* Not Recorded.

MR. SPEAKER: I am appealing to you. I have allowed some discussion which is not permitted. Even then, you are not cooperating. This is not fair. You give your word, but do not keep it up. Do not think it as a weakness of the Chair.

श्री अनंत गंगाराम गीते : वहां पर फिर से राट्रपति शासन लाने की बात उठ रही है। ...(व्यवधान) अध्यक्ष जी, वहां एक ाड्यंत्र के तहत लोकतंत्र की हत्या की जा रही है...(व्यवधान) वहां प्रजातंत्र की हत्या की जा रही है और केन्द्र सरकार खामोश है।...(व्यवधान) जिस प्रकार से संविधान की हत्या हो रही है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : गीते जी, यह क्या है। हम आपका विश्वास करते हैं, आप लोग भी हमें सहयोग कीजिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : इसलिए देश की जनता के मन में यह आशंका है कि इसके लिए केन्द्र सरकार जिम्मेदार है। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Nothing more of him will be allowed to go on record.

*(Interruptions) ...**

MR. SPEAKER: Now, Shri Mohan Singh will speak, at the request of Prof. Ram Gopal Yadav.

श्री मोहन सिंह (देवरिया) : अध्यक्ष महोदय, जो कुछ भी झारखंड में हो रहा है। जिनका संसदीय लोकतंत्र में यकीन है, उनके लिए यह चिंता का विाय है और मैं ऐसा नहीं मानता हूं कि इस मामले में भारत सरकार अपने दोा को किसी तरह से छिपा पायेगी। यदि राज्यों के अधिकारों का गला घोंटकर केन्द्रीय सरकार का आधिपत्य स्थापित करना हमारे संविधान की मंशा होगी तो मैं ऐसा समझता हूं कि यह बहुत गलत है और संविधान की भावना के विरुद्ध है। हम एन.डी.ए. के विरोधी हैं। कल एन.डी.ए. ने हमारी सरकार के खिलाफ जबरदस्त प्रदर्शन किया है। बावजूद इसके हम इस बात के पक्षधर हैं कि राज्यों में जिन दलों और जिस गठबंधन का बहुमत हो, उन्हें सरकार बनाने का अधिकार दिया जाना चाहिए और उस अधिकार से उन्हें वंचित नहीं किया जाना चाहिए। यदि ऐसा किया गया कि राज्यों के अंदर केन्द्रीय शासन किसी बहाने से लागू करके केन्द्र की ही हुकूमत सभी राज्यों में रहे तो मैं समझता हूं कि हमारे संविधान की जो धारणा है, यह उसके विरुद्ध है। इसलिए मैं भारत सरकार से अपील करना चाहता हूं कि पूरा देश ो देख रहा है और अपने दोा को यदि आप यह बताकर छिपाना चाहेंगे कि हम इसमें निर्दोा हैं, इसमें भारत सरकार का कोई हाथ नहीं है।

* Not Recorded.

अध्यक्ष महोदय : आप हमें मत बोलिये।

श्री मोहन सिंह : महोदय, मैं आपको नहीं कह रहा हूं, मैं केवल भारत सरकार को कह रहा हूं। मैं भारत सरकार को इस बात के लिए चेतावनी देना चाहता हूं कि झारखंड के अंदर जो बहुमत पार्टी है, उसे सरकार बनाने का अधिकार दिया जाना चाहिए। वही की असैम्बली के सामने आज की तारीख में किसका बहुमत है, केवल इसका निश्चय करने के लिए...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप लोग टोका-टाकी मत कीजिए।

श्री मोहन सिंह : वहां की असैम्बली की बैठक हुई थी। वहां की असैम्बली की बैठक केवल इस बात के लिए हुई थी।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मोहन सिंह जी, आप बहुत बुजुर्ग सदस्य हैं।

श्री मोहन सिंह : वहां असैम्बली की बैठक इस बात के लिए हुई थी कि आज वहां किसका बहुमत है। उस बात को केवल टालने के लिए एक परिस्थिति पैदा की जा रही है कि राट्रपति शासन वहां पर लागू कर दिया जाए। यह परिस्थिति इस देश के लोकतांत्रिक भविय के लिए दुखदाई होगी।...(व्यवधान) उत्तर प्रदेश के भावी खतरे को देखते हुए मैं कह रहा हूं। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Okay. You have made your point. Nothing will be recorded except the observations of the hon. Members whom I call.

Now, Shri Gurudas Dasgupta.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Respected Speaker, Sir, let me make it very clear that our Party – Left in general – does not approve of the things that are developing or allowed to develop in Jharkhand. We are extremely sorry because democracy is being tinkered with, not by one Party but by a number of Parties. Country is losing because democratic institutions are losing.... (*Interruptions*) I will come to that later on, if you allow me to speak.

MR. SPEAKER: You may ignore him because that is not being recorded.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : I am of the opinion that Shri Shibu Soren should not have been allowed to form the Government. So hastily, he should not have been allowed to form the

Government. We are of the opinion that the Assembly should not be prevented from deciding who is in the majority. The Assembly should be allowed to function to decide about the combination having majority and as to who should form the Government. We are also of the view that the President Rule should be the last resort because there had been voting, an arithmetic and an election. While saying so, may I very honestly and frankly submit, if hon. Members remain patient, I have made my position clear with regard to what has happened in Jharkhand but I am very sorry to say the way in which the MLAs were taken from Jharkhand to Rajasthan… (*Interruptions*) I am very sorry, Sir.… (*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदय : ये क्या हो रहा है? Please conclude now.

SHRI GURUDAS DASGUPTA : I am only saying that the democracy can survive if the political Parties agree to conform to the rule of the game. If the rule of the game has been violated by one Party in Jharkhand, it is equally true that the rule of the game has been violated by almost kidnapping the MLAs from Jharkhand.… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Hon. Members"""""" importance is not being determined by the order in which I call them to speak. It just happens like this. All are very hon. Members.

SHRI KINJARAPU YERRANNAIDU (SRIKAKULAM): Sir, the whole country knows that according to the judgement of the Supreme Court, the *pro tem* Speaker has to seek the show of strength on the floor of the House. So far, the House has been adjourned four times. It seems that he wants to create a mess in the House which will ultimately lead to the President"""""s Rule in the State. This will lead to the burial of democracy. We will have to save the democracy. Parliament is the supreme body. The action of the *pro tem* Speaker is the most illegal. The UPA Government is engineering all these things. We will have to take a decision. This is not good for the democracy. The Supreme Court order should be implemented as it is.… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You have made your position clear. I cannot implement it.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: It is not being recorded. I appeal to all the hon. Leaders, to please allow other hon. Members to speak. I have allowed him, and all the hon. Leaders present here, to speak.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं तो बिल्कुल अलग राय रखता हूँ। इसलिए कि जो बहस हो रही है, क्या कोई ऐसी परंपरा है, कोई ऐसा अभूतपूर्व, अनप्रिसिडैन्टेड प्रिसिडैन्स आज सदन में कायम हो रहा है कि असैम्बली के फंक्शनिंग पर चर्चा हो रही है। …(व्यवधान) आप अपनी बात कह रहे थे तो हम सुन रहे थे, हमने कोई हल्ला नहीं किया था। हमें बोलने दीजिए।

MR. SPEAKER: I am requesting all the hon. Leaders to request their Party Members to cooperate.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, जब ये लोग बोल रहे थे तो हम टोकाटोकी नहीं कर रहे थे। अब हम बोल रहे हैं तो ये हमें सुन लें। मुझे बहुत अद्भुत लग रहा है जो परंपरा स्थापित की जा रही है कि झारखंड असैम्बली के फंक्शनिंग पर इस सदन में चर्चा हो रही है कोई पक्की जानकारी नहीं है वहां क्या हो रहा है। …(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, झारखंड विधान सभा में जो घटना घट रही है, उसकी औथेंटिक जानकारी देने वाला कोई जवाबदेह माननीय सदस्य है, वह बताएं, पहला सवाल मेरा यह है ? …(व्यवधान) महोदय, हम जानना चाहते हैं …(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप सुनिए। बैठिए। मल्होत्रा जी, हम आपसे दो बार कह चुके हैं, आप अपने सदस्यों से शान्त रहने को कहें। हमने सबको सुना है। हमें सब नेतागण को सुनना है।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं कि झारखंड विधान सभा की औथेंटिक जानकारी किस नेता के पास है, यहां बहस किस बात की हो रही है ? …(व्यवधान) यह बहस अपरिपक्व है।

MR. SPEAKER: Nothing else, except the hon. Member whom I have called, will be recorded.

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, मुझे आश्चर्य और कौतुक हो रहा है, यदि इसी तरह से बहस का स्तर गिरता गया, तो ठीक नहीं होगा। कल संसद में हमने इस सवाल को उठाया था कि इस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए और हमने कहा था कि न्यायपालिका और पार्लियामेंट्री डैमोक्रेसी, संसद या विधायिका में कोई टकराव नहीं हो। इस पर काफी चर्चा कर के हमने सर्वदलीय बैठक कर के कहा था कि यह बहुत ही संवेदनशील मामला है। यदि एक बार इस तरह की परम्परा स्थापित हो जाएगी, तो बार-बार, किसी भी असैम्बली में, किसी भी विधान सभा की कोई भी कार्रवाई होगी, उसकी बहस यहां होने लगेगी।

MR. SPEAKER: Your point is noted.

… (*Interruptions*)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : इसलिए हमें बहस का एक ऊंचा स्तर बनाए रखना चाहिए। आज जिस विाय पर संसद में बहस हो रही है, यह नियमानुकूल नहीं है, परम्परा के विरुद्ध है। …(व्यवधान)

MR. SPEAKER: I have said that I am allowing it without creating any precedent.

… (*Interruptions*)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, जो लोग बहुमत की बात कर रहे हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या उनके अल्पमत दल को बिहार में मुख्यमंत्री पद की शपथ नहीं दिलायी गयी थी ?

MR. SPEAKER: Please cooperate. I have called Shri Rupchand Pal.

… (*Interruptions*)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : राज्यपाल की भूमिका पर तब भी हमने कोई चर्चा नहीं की, हमने परम्परा को बनाए रखा था। मैं पुनः पूछना चाहता हूं कि बिहार में क्या इनकी सरकार को वोट ऑफ कॉन्फीडेंस दिलाने का काम नहीं किया था ? …(व्यवधान) हमने तब भी कहा था और अब कह रहे हैं कि राज्यपाल की भूमिका पर यहां चर्चा नहीं होनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : हमने राज्यपाल की भूमिका पर सदन में चर्चा नहीं होने दी। हमने उसे एलाऊ नहीं किया। आप इस बात को जानते हैं। आप बैठिए।

…(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, झारखंड के माननीय विधायकों को किस प्रकार से अपहृत कर के राजस्थान ले जाया गया, इसकी भी जांच होनी चाहिए, कैसे और क्यों राजस्थान ले जाया गया। …(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Nothing else, except what Shri Rupchand Pal says, will be recorded.

(Interruptions) … *

* Not Recoded.

श्री नीतीश कुमार (नालन्दा) : अध्यक्ष जी, देवेन्द्र प्रसाद यादव जी ने एक चीज डायरैक्ट रेफरेंस कर के कही है। ...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : सर, हमने नाम नहीं लिया है। ...(व्यवधान)

श्री नीतीश कुमार : ठीक है, नाम नहीं लिया है, लेकिन इनडायरैक्ट रैफरेंस किया है। इसलिए मुझे भी बोलने का अवसर दिया जाए। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Nothing will go on record.

*(Interruptions) ...**

MR. SPEAKER: There was a solemn agreement. I am sure all of you wish to comply with that agreement. Please be brief and to the point. There is no question of repetition.

SHRI RUPCHAND PAL (HOOGHLY): In your wisdom you have allowed the issue to be raised and you have also stated that this should not be taken as a precedent. The House should not be used in such a manner, as is transpiring or happening in the Assembly. At the State level, the Assembly Members should take their own decision on the floor of the Assembly. But what is happening to the democracy today is a matter of great concern to all of us. This side or that side is not a matter because their track record is very much known. The ultimate thing which they have done by kidnapping the MLAs and keeping them in confinement… (*Interruptions*) they have no moral right to raise this issue.

Sir, to put the records straight, I would submit that in the interest of democracy, the floor should be the ultimate deciding factor to form the Government and to elect the Chief Minister in all these cases. What is happening is a matter of great concern. Interference in the legislature by the judiciary is also another matter of great concern.

श्री ब्रजेश पाठक (उन्नाव) : अध्यक्ष महोदय, यह मुद्दा तो विधान सभाओं का था, लेकिन आज इस पर चर्चा संसद में हो रही है। ...(व्यवधान)

* Not Recorded

MR. SPEAKER: At least, some time you should listen to the request of the Chair.

श्री ब्रजेश पाठक : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बहुजन समाजवादी पार्टी की तरफ से इस मुद्दे पर अपना मत स्पट करना चाहता हूं। संविधान में यह स्पट कहा गया है कि दलितों को, पिछड़े वर्गों को, आदिवासियों को आगे लाया जाए और उनके कल्याण के काम किए जाएं, लेकिन आज बड़े दुख का विाय है कि जब एक आदिवासी ने जब झारखंड में मुख्य मंत्री की शपथ ली, तो पूरे हिन्दुस्तान में हो-हल्ला मच रहा है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यों को निर्देशित किया जाए और मेरी बात सुनी जाए। मुझे आपने बोलने की इजाजत दी है। आज हो-हल्ला मचाने का काम किया जा रहा है।

MR. SPEAKER: Let there be an order in the House. आप खत्म कीजिए। Please be brief.

श्री ब्रजेश पाठक : मैं दो लाइनों के माध्यम से अपनी बात कह कर समाप्त करूंगा।

"चमन को सींचने में कुछ पत्तियां झड़ गई होंगी, यही इल्ज़ाम है मुझ पर बेवफाई का,

जिन्होंने कलियों को रोंद डाला, वे दावा कर रहे हैं वतन की रहनुमाई का।"

मित्रों, यह किसी से छिपा नहीं है कि पूर्व राज्य सरकार का बिहार में क्या हुआ था।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : पाठक जी, आप संक्षेप में बोलिए।

...(व्यवधान)

श्री ब्रजेश पाठक : अध्यक्ष महोदय, मैं आज स्पट करना चाहता हूं कि बहुजन समाज पार्टी की नीतियां हैं कि समाज में जो दबाए गए, कुचले गए और पछाड़े लोग हैं, उन्हें सत्ता में भागीदारी देनी पड़ेगी। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Now the Leader of the House to speak.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Do not record anything. Nothing will be recorded except the intervention of the hon. Leader of the House. Please keep your promise.

(Interruptions) ... *

* Not Recorded

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI PRANAB MUKHERJEE): Sir, with your permission, I would like to make a small submission… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Mr. Ramadas Athawale, nothing will be recorded. Please sit down.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: It seems, you are defying the Chair deliberately.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You are defying the Chair.

… (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You are defying the Chair. This is the third warning. After third warning, you do not know what will happen.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Sir, I did not have any intention of participating in this discussion as I believe that Constitution has clearly earmarked the areas of functioning, jurisdiction of the State Legislative Assembly, and Parliament. Therefore, what is relevant to the State should be discussed and debated on the floor of the Assembly including the expression of confidence or no-confidence. This is the exclusive jurisdiction of the members of the State Legislative Assembly in respect of State political executive. But while making observations, some hon. Members have drawn the inference as if what is happening in Jharkhand, Union Government is responsible for that or the Congress Party is responsible for that… (*Interruptions*).

Most respectfully I would like to submit that I have listened to you with rapt attention and patience and I expect the similar treatment to me when I speak. It is not necessary that you should agree with what I say or I should agree with your views. But here we have the right to exchange our views and minimum thing which we demand, as you have very correctly pointed out, is the patience of listening to each other.

Certain references to Goa and other things have also been made. I had the privilege of being in the other House for a pretty long time. We discussed the State matters when the State is brought under the President's Rule under Article 356. We will have the opportunity to discuss what has happened in Goa and what has happened in Bihar when we would discuss their Budgets and the Resolutions for the approval of the Presidential Proclamation as these two States are under President's Rule. Therefore, we will respond to those points which have been referred to and what led to the imposition of President's Rule in Goa. This is not the occasion to discuss that.

This is an occasion to discuss what has happened in Jharkhand. What is happening in Jharkhand Assembly is not known to us authoritatively because whatever is happening there is still unfolding. We have heard from the media that the State Assembly has been adjourned from time to time. The Government will have to ascertain the factual position from the authoritative sources if they want to share it with the House. There are procedures for that.

The short point which I want to clear is that we want a decision should be taken on the floor of the Jharkhand Assembly. We would expect that the people of Jharkhand would have whichever Government they want.

13.00 hrs.

But so far as the Union Government is concerned, we have nothing to do with the developments whatever are taking place in Jharkhand. We have made it quite clear. Even political functionaries, party functionaries, the hon. Prime Minister, the hon. Home Minister have made it quite clear and I am reiterating that what is happening there is a matter of the State and there is no occasion where the Government of India has to intervene. In the Constitution there is a provision when the Government of India has to intervene. Unless that situation arises, there is no question of the Government of India's intervention. We have nothing to do with what is happening there right now… (*Interruptions*)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : प्रियरंजन दासमुंशी जी ने कहा है कि मुझे सोनिया जी ने गवर्नमेंट बनाने के लिए भेजा है।...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: The House stands adjourned to meet again at 2 p.m.

13.01 hrs.

The Lok Sabha then adjourned for Lunch till

Fourteen of the Clock.